I

Lecture Series No:- 64.

Online class.
Date-19/2/2022.
Day Monday,
Time-10: to 10:50 A.M

Topic,

(1) Essest.

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A part -I
paper - II (H.)
A.N.D. College shahpur patory,
samastipur,

Ans:-

बर्कले ने अपने दर्शन में ज्ञान के समस्त सत विषयों को आत्मगत या मन पर निर्भर माना है। इसलिये उनके दर्शन को आत्मगत प्रत्ययवादी दर्शन कहा जाता है। आत्मगत प्रत्ययवाद से तात्पर्य उस सिद्धान्त से है जिसके अनुसार केवल मात्र मन और प्रत्यय के अस्तित्व को ही माना जाता है तथा इसके अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु के स्वतन्त्र अस्तित्व को नहीं माना जाता है।

P.T.O.

दूसरे शब्दों में समस्त प्रत्ययों का आत्मगत ही स्वीकार किया जाता है। बर्कले के "सत्ता दृष्टता है" (Esse est Percipi) से भी यही तात्पर्य है कि अनुभवकर्ता अथवा द्रष्टा आत्मा है और अनुभव के विषय अर्थात सत्ता प्रत्यय हैं। इस प्रकार मनस या आत्मा और अनुभव के विषय अर्थात बाह्य प्रत्यय हैं।

उनके इस सिद्धान्त के मुख्य तर्क निम्न प्रकार हैं।

(1) संवेदनायें दृष्टगत हैं।

जैसा कि बर्कले की ज्ञान मीमांसा का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने ज्ञाता और ज्ञान से किसी प्रकार के द्वैत को स्वीकार नहीं किया है। क्योंकि उनके अनुसार ज्ञान से बाहर वस्तु का कोई

P.T.O.

(3)

अस्तित्व नहीं है। इसी आधार पर जिनको हम वस्तु समझते हैं वे वास्तव में संवेदनायें या संवेदनायें का प्रत्यय है। और संवेदनायें संवेदनायें सदैव आत्मगत होती है।

उदाहरणार्थ :-> जब मैं यह कहता हूँ कि मैं मेज पर लिखने का कार्य कर रहा हूँ। अतः मेज का अस्तित्व है। जब यह कहने का यह तात्पर्य होता है कि मेज को छू और देख सकता हूँ। अर्थात् उसमें छुआ है और जब मैं कमरे से बाहर रहता हूँ। या यह कहता हूँ कि कमरे में मेज है। तब मेरे कहने का यह अभिप्राय होता है। etc.

"END"

P.T.O